सत्ता के स्रोत (Sources of Authority) - सत्ता की अवधारणा की विवेचना सुकरात, प्लेटो और अरस्तु आदि के समय से होती रही है, किन्तु इसकी विस्तृत विवेचना बीसवीं सदी के राजनीतिक और समाजशास्त्रीय विश्लेषक मैक्स वेबर द्वारा प्रस्तुत की गयी है। सत्ता एवं औचित्यपूर्णता का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है और मैक्स वेबर ने इस सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए औचित्यपूर्णता के आधार पर सत्ता के स्रोतों एवं प्रकारों का वर्णन किया है। इनके अनुसार अपने स्रोत के आधार पर सत्ता तीन प्रकार की होती हैं।

1. परम्परागत (Traditional) - जब प्रजा या अधीनस्थ वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों को इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि ऐसा सदैव से होता आया है, तो सत्ता का यह प्रकार परम्परागत कहा जाएगा। इस प्रकार परम्परागत सत्ता का अभिप्राय शासन के उस अधिकार से है जो राजनीतिक शक्ति के अनवरत प्रयोग से उभरता है। इस प्रकार की सत्ता में पदाधिकारी मात्र अस्थायी रूप से किया जाता और स्वेच्छाचारी होता है। अधीनस्थ सेवक समझे जाते हैं और वे आज्ञापालन परम्पराओं के प्रतीक विशेष व्यक्ति के कारण करते हैं जैसे राजतन्त्र में राजा।

2. बौद्धिक - कानूनी या वैधानिक नौकरशाही सत्ता (Rational Legal or Legal Bureaucratic Authority) - जब अधीनस्थ किसी नियम को इस आधार पर स्वीकार करते हैं कि वह नियम उन उच्चस्तरीय अमूर्त नियमों के साथ सम्मत है, जिसे वे औचित्यपूर्ण समझते है, तब इस स्थिति में सत्ता को बौद्धिक-कानूनी माना जाता है। यह सत्ता संवैधानिक नियमों के अन्तर्गत धारण किये गये पद से प्राप्त होती है। अमरीका में जब राष्ट्रपति पद का कोई उम्मीदवार निर्वाचक मण्डल का बहुमत प्राप्त कर लेता है अथवा जब भारत में लोकसभा के बहुमत सदस्य किसी को अपना नेता निर्वाचित कर उसे प्रधानमन्त्री पद

Avinash

पर प्रतिष्ठित कर देते हैं, तब यह सत्ता का बौद्धिक - तार्किक आधार ही होता है। इसमें सत्ता का प्रयोजन बौद्धिक आधार पर किया जाता है और कर्मचारीगण वैधानिक रूप से स्थापित निवैयक्तिक आदेशों के आधार पर अनुशासन करते हैं। सत्ता का यह रूप आधुनिक नौकरशाही को अपने विशुद्ध रूप में प्रकट करता है।

3. करिश्मात्मक सत्ता (Charismatic Authority) – जब अधीनस्थ वरिष्ठ सत्ताधारी के आदेशों को इस आधार पर न्यायसंगत मानते हैं कि उन पर सत्ताधारी का व्यक्तिगत प्रभाव है, तब इसे करिश्मात्मक सत्ता कहते हैं। इस सत्ता स्थिति में प्रायः कोई प्रयोजन नहीं होता और अधीनस्थ अथवा कर्मचारी सत्ताधारी के व्यक्तिगत सेवक के रूप में आचरण करते हैं। अधीनस्थ अनुयायी होते हैं और अपने प्रिय नेता के करिश्माती एवं आदर्शवादी व्यक्तित्व के कारण उसके आदेशों का पालन करते हैं। स्पष्टतया मैक्सवेबर केवल औचित्यपूर्ण सत्ता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। मैक्सवेबर बतलाता है कि बौद्धिक कानूनी सत्ता कमजोर एवं भंजनशील होती है, अतः इसे सबल करने के लिए उसमें परम्परागत एवं करिश्माती तत्वों को शामिल किया जाना चाहिए।

संस्थात्मक शक्ति की दृष्टि से सत्ता का विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया जाता है और इस सत्ता प्रयोग के आधार पर व्यापक सन्दर्भ में सत्ता के और भी प्रकार हो सकते हैं।
(i) क्षेत्रीयता की दृष्टि से राष्ट्रीय, प्रान्तीय और स्थानीय।
(ii) अपेक्षाकृत व्यापक सन्दर्भ की दृष्टि से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय।
(iii) संवैधानिक दृष्टि से संविधान से प्राप्त अथवा साधारण कानूनों से प्राप्त। (iv) सरकार के परम्परागत अंगों के आधार पर कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं न्यायपालिका सम्बन्धी,
(v) राजनीतिक दृष्टि से राजनीतिक तथा प्रशासनिक
(vi) संरचनात्मक दृष्टि से एकल, बहुल, नियमनात्मक, आयोगात्मक अथवा मण्डलात्मक तथा (vii) विभिन्न विषयों की दृष्टि से सत्ता आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, तकनीकी, आदि हो सकती है।

Avinash

Scanned with CamScanner